धुर द पैगाम एक औंकार सतिगुरू प्रसादि आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तपं: तपौ
जपौ जपं:
मेरे साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
ऐसी मरनी जो मरै - बहुर न मरना होइ । कबीरा मरता-मरता जग मुआ - मर भि न जाने कोइ । किआ जाणा किव मरहगे - कैसा मरणा होइ । जे कर साहिब मनह न वीसरै - ता सहिला मरणा होइ ।
Www.9009.co.in
(हिन्दी)

"जीवित मरिये - भवजल तरिए"

1. ऐसी मरनी जो मरै - बहुर न मरना होइ । कबीरा मरता मरता जग मुआ - मर भि न जाने कोइ । (555)

अर्थः- हे कबीर ! मरता मरता (वैसे तो) सारा संसार ही मर रहा है, पर किसी ने भी (सच्चे) मरने की विधि नहीं सीखी । जो मनुष्य इस तरह की सच्ची मौत मरता है, उसे फिर मरना नहीं पड़ता ।

a. किआ जाणा किव मरहगे - कैसा मरणा होइ । जे कर साहिब मनह न वीसरै - ता सहिला मरणा होइ ।

अर्थः- मुझे तो ये पता नहीं कि (सच्चा) मरना क्या होता है और हमें कैसे मरना चाहिए । अगर मालिक मन से ना विसरे, तो मरना आसान हो जाता है (भाव, मनुष्य आराम से ही माया के प्रभाव से बच जाता है) ।

मरणै ते जगत डरै - जीविआ लोड़ै सभ कोइ । गुर परसादी जीवत मरै - हुकमै बूझै सोइ ।

अर्थः- मरने से सारा संसार डरता है, हर कोई जीना चाहता है । गुरु की कृपा से जो मनुष्य जीवित ही मरता है, वह हरि की रजा को समझता है ।

नानक ऐसी मरनी जो मरै - ता सद जीवण होइ । (६६६)

अर्थः- हे नानक ! इस तरह की मौत जो मरता है, (भाव, जो मनुष्य प्रभु की रजा में चलता है) उसे अटल जीवन मिल जाता है ।

b. जिह मरनै सभ जगत तरासिआ । सो मरना गुर सबद प्रगासिआ ।

अर्थः- जिस मौत ने सारा संसार डराया हुआ है, गुरु के शब्द की इनायत से मुझे समझ आ गई है कि वह मौत असल में क्या चीज है।

अब कैसे मरउ मरन मन मानिआ । मर-मर जाते जिन राम न जानिआ ।

अर्थः- अब मैं जनम-मरण के चक्कर में क्यूँ पड़ूंगा ? (भाव, नहीं पड़ूंगा) (क्योंकि) मेरा मन स्वै भाव की मौत में पतीज गया है ।

(केवल) वह मनुष्य सदा पैदा होते मरते रहते हैं जिन्होंने प्रभु को नहीं पहचाना (प्रभु से साझ नहीं डाली) ।

मरनो मरन कहै सभ कोई । सहजे मरै अमर होइ सोई ।

अर्थः- (दुनिया में) हरेक जीव 'मौत मौत' कह रहा है (भाव, हरेक जीव मौत से घबरा रहा है), (पर जो मनुष्य) अडोलता में (रह के) दुनियां की ख्वाहिशों से बेपरवाह हो जाता है वह अमर हो जाता है (उसे मौत डरा नहीं सकती) ।

कह कबीर मन भइआ अनंदा । गइआ भरम रहिआ परमानंदा।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 327)

अर्थः- हे कबीर ! कहः (गुरु की कृपा से मेरे) मन में आनंद पैदा हो गया है, मेरा भुलेखा दूर हो चुका है, और परम सुख (मेरे हृदय में) टिक गया है ।

c. कबीर जिस मरने ते जग डरे - मेरे मन आनंद । मरने ही ते पाईऐ - पूरन परमानंद । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1365)

अर्थः- ('दुनिया' की खातिर 'दीन' को बिसार के मनुष्य धन-पदार्थ पुत्र स्त्री आदि कई मित्र बनाता है, और इनसे सुख की आस रखता है, इस आस के कारण ही इनसे मोह तोड़ नहीं सकता; पर) हे कबीर ! जिस (के त्याग रूप) मौत से जगत डरता है, उससे मेरे मन में खुशी पैदा होती है; 'दुनिया' के इस मोह से मरने पर ही वह परमात्मा मिलता है जो मुकम्मल तौर पर आनंद स्वरूप है ।

d. कबीर मुह मरने का चाउ है – मरउ त हरि के दुआर । मत हरि पूछै कउन है – परा हमारै बार । (1367)

अर्थः- हे कबीर ! मेरे अंदर तमन्ना है कि मैं स्वै-भाव मिटा दूँ, ममता खत्म कर दूँ; पर ये स्वै-भाव तब ही मिट सकता है अगर प्रभु के दर पर गिर जाएं, (इस तरह कोई अजब बात नहीं कि मेहर करके वह बख्शिंद) प्रभु पूछ ही बैठे कि मेरे दरवाजे पर कौन गिरा पड़ा है । ममता त्यागनी है, पर यह त्याग के भी प्रभु के दर से बख्शिश की आस रखनी है, ममता के त्याग से कोई हक नहीं बन जाता कि अब जरूर मिल जाएगा ।

e. कबीर ऐसी होइ परी – मन को भावत कीन । मरने ते किआ डरपना – जब हाथ सिधउरा लीन । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 1368)

अर्थः- जो हिन्दू स्त्री अपने पति के मरने पर उसके साथ ही चिता में जल-मरना चाहती थी, वह अपने हाथ में सिंदूरा हुआ नारियल पकड़ लेती थी। सिंदूर लगा नारियल हाथ में पकड़ लेना इस बात की निशानी थी कि स्त्री मौत से नहीं डरती, और अपने मरे पति के साथ जलने को तैयार है । इसी तरह जिस भाग्यशाली मनुष्य को प्रभु-दर से भक्ति की दाति मिले, यह दाति ही इस बात की निशानी है कि इस मनुष्य ने स्वै-भाव की मौत से नहीं डरना, खुशी-खुशी स्वै भाव त्यागेगा, विकारों से मुँह मोड़ेगा । हे कबीर! जब कोई स्त्री (अपने पति के मरने पर) हाथ में संदूर लगा नारियल पकड़ती है तब वह मरने से नहीं डरती । जिस मनुष्य को प्रभु मन-भाती (भक्ति की) दाति बख्शता हे, जिस पर अजीब मेहर होती है, वह मनुष्य खुशी-खुशी स्वै-भाग स्वै-भाव त्यागता है।

f. सबद मरै सो मुआ जापै । गुर परसादी हरि रस धापै ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु के शब्द से (मनुष्य विकारों के प्रति) मर जाता है (उस पर विकार अपना असर नहीं कर पाते) (और विकारों के प्रति) मरा हुआ मनुष्य (जगत में) शोभा कमाता है । गुरु की किरपा से हरि-नाम-रस से (मनुष्य माया की तृष्णा के प्रति) तृप्त रहता है ।

हरि दरगह गुर सबद सिञापै । बिन सबदै मुआ है सभ कोइ।

अर्थः- गुरु के शब्द की इनायत से (मनुष्य) परमात्मा की हजूरी में (भी) सम्मान प्राप्त करता है । हे भाई ! गुरु के शब्द के बिना हरेक जीव आत्मिक मौत मरा रहता है ।

मनमुख मुआ अपुना जनम खोइ । हरि नाम न चेतह अंत दुख रोइ । नानक करता करे स होइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1418)

अर्थः- अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य अपना मानव-जीवन व्यर्थ गवा के आत्मिक मौत सहेड़ी रखता है । जो मनुष्य परमात्मा का नाम नहीं स्मरण करते, वे (जिंदगी के) आखिर तक (अपना कोई ना कोई) दुख (ही) रोते रहते हैं । पर, जीवों के भी क्या वश ?) हे नानक ! (जीवों के पिछले किए कर्मों के संस्कारों के अनुसार जीव के लिए) परमात्मा जो कुछ करता है, वही होता है ।

(पाठी मां साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

These verses from Guru Granth Sahib discuss the idea of "true death" — not physical death, but the death of ego, attachment, desires, and selfishness. The teachings say that people fear ordinary death, yet remain spiritually trapped because they do not learn how to "die" spiritually while alive.

- The whole world dies physically, but very few understand the deeper meaning of death.
- "True death" means giving up ego, worldly attachment, greed, and selfish desires.
- A person who dies this spiritual death while alive becomes free from fear, suffering, and the cycle of rebirth.
- Remembering God and living according to divine will makes this inner transformation easy.
- Most people fear death because they are attached to worldly pleasures and relationships.
- Through the Guru's wisdom ("Shabad"), one learns how to rise above desires and become spiritually alive.
- Those who do not recognize God continue suffering spiritually, even while physically alive.
- The death people fear actually brings supreme joy, because it leads to union with the Divine.
- Spiritual surrender is compared to a devoted wife willingly accepting death with her husband: a symbol of complete dedication and fearlessness.

- The person who conquers ego and attachment attains peace, bliss, honor in God's presence, and immortality of the soul.

Hence, the passages teach that real liberation does not come from physical death, but from inner spiritual transformation. By overcoming ego and attachment through devotion, remembrance of God, and the Guru's guidance, a person becomes fearless, peaceful, and spiritually immortal.

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें - धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला - दुर्लभ - मर्यादित - महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

" No help is coming dear ! – so, you better start NOW – Help Yourself ? "

धुर द पैगाम
एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
तपः तपौ
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
रूहानी
सतसंग
ऐसी मरनी जो मरै - बहुर न मरना होइ । कबीरा मरता-मरता जग मुआ - मर भि न जानै कोइ । किआ जाणा किव मरहगे - कैसा मरणा होइ । जे कर साहिब मनह न वीसरै - ता सहिला मरणा होइ ।
Www.9009.co.in
(हिन्दी)